IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# भागलपुर शहर के मिशनरी एवं गैर–मिशनरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर व्यक्तिगत मूल्यों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

**सुरेष बिन्द**

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (विभागाध्यक्ष)

मनोविज्ञान विभाग, पी.बी.एस. कॉलेज, बांका, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

**सारः** वर्तमान अध्ययन भागलपुर शहर के मिशनरी एवं गैर–मिशनरी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर व्यक्तिगत मूल्यों के प्रभाव की तुलना करने के लिये किया गया। अध्ययन के उद्देश्य थे – 1. विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच व्यक्तिगत मूल्यों की प्रकृति का अध्ययन करना। 2. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों पर विद्यालय के प्रकार के प्रभाव का अध्ययन करना। 3. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करना। अध्ययन 10 स्कूलों (5 मिशनरी और 5 गैर–मिशनरी) माध्यमिक विद्यालयों में 9वी कक्षा में पढ़ने वाले 300 छात्रों जिसमें 150 लड़के और 150 लड़कियां थीं, के नमूने पर आयोजित किया गया था। आंकड़ा के संग्रह करने के लिए कमला वशिष्ठ और अंजू जयदीप द्वारा विकसित व्यक्तिगत मूल्य पैमाने का उपयोग किया गया। छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धि माना गया। यह पाया गया कि मिशनरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य उच्च स्तर की और अधिक विकसित हैं।

**कीवर्डः** मिशनरी विद्यालय, गैर–मिशनरी विद्यालय, व्यक्तिगत मूल्य, शैक्षणिक उपलब्धि, भागलपुर।

## परिचय

शिक्षा मानव समाज के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। शिक्षा से ही हमारी सोचने की क्षमता, सामाजिक समरसता, और सामाजिक न्याय की भावना विकसित होती है। मिशनरी और गैर–मिशनरी विद्यालयों के बीच शिक्षा प्रणालियों का अंतर बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास पर प्रभाव डालता है। आज के परिदृश्य में, छात्रों को शिक्षण के विभिन्न तरीकों के संपर्क में लाने, उपलब्ध नवीनतम तकनीकी प्रगति के अनुभव प्रदान करने, समूह और सहकर्मी गतिशीलता के लाभों का उपयोग करने आदि के रूप में विशेष बल देने पर जोर दिया जाता है। जबकि छात्रों की आंतरिक प्रेरणा और पेचीदगियों का पता लगाने के लिए बहुत कम प्रयास किया जाता है। वर्तमान अध्ययन में, छात्रों के आंतरिक पहलुओं की जांच करने का प्रयास किया गया है और यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि ये पहलू छात्रों की उपलब्धि को कैसे प्रभावित करते हैं। वर्तमान अध्ययन में व्यक्तिगत मूल्य और शैक्षणिक उपलब्धि को मुख्य चर के रूप में लिया गया है।

सरकारी स्कूलों को पाठ्यक्रम में जो कुछ भी है, उसके रूप में छात्रों को न्यूनतम प्रदान करने के लिए जाना जाता है। निजी स्कूल छात्रों की क्षमता से अधिक शिक्षा देने और छात्रों को दौड़ के लिए तैयार होने वाले घोड़े की तरह तैयार करने के लिए बदनाम हैं। मिशनरी स्कूल व्यक्तिगत विकास पर जोर देने के साथ शिक्षा प्रदान करने के लिए जाने जाते हैं।

व्यक्तिगत मूल्यों को किसी व्यक्ति द्वारा अपनी सही और गलत स्थितियों का आकलन करने के लिए निर्धारित कुछ सिद्धांतों के रूप में माना जा सकता है। व्यक्तिगत मूल्य मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो हमारे विश्व दृष्टिकोण, दृष्टिकोण और आचरण को आकार देते हैं। हालाँकि, व्यक्तिगत मूल्य या तो जन्मजात या अधिग्रहित होते हैं। व्यक्तिगत मूल्यों पर एक मजबूत ध्यान शैक्षिक मॉडल का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। समस्या यह है कि स्कूलों में व्यक्तिगत मूल्यों की शिक्षा की उपेक्षा हमारे छात्रों को आहत कर रही है और समाज में समस्याएं पैदा कर रही है। प्रस्तुत अध्ययन में मिशनरी एवं गैर–मिशनरी विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना करने तथा उनकी उपलब्धि पर इसके प्रभाव को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

## अध्ययन की आवश्यकता

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था की प्रारंभिक अवस्था में होते हैं। किशोरावस्था समायोजन की एक विशिष्ट अवधि है जहां एक किशोर को तेजी से शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। यह महत्वपूर्ण अवधि है जब व्यक्ति की व्यक्तिगत मूल्यों का विकास होता है जो उसके जीवन भर साथ–साथ चलते हैं। मलिक (2015) ने सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों और कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के किशोर लड़के और लड़कियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया। सिन्हा, शर्मा और गुप्ता (2007) ने सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया। मिशनरी और गैर–मिशनरी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों की व्यक्तिगत मूल्यों में अंतर खोजने के लिए इस क्षेत्र में और अधिक शोध करने की आवश्यकता है। हालांकि कई अध्ययन किए गए हैं, किसी ने भी मिशनरी स्कूलों को अलग से शामिल नहीं किया है। विषय पर अभी भी कोई सहमति नहीं है इसलिए अन्वेषक ने इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में अनुसंधान करना महत्वपूर्ण समझा।

## अध्ययन का उद्देश्य

1. विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच व्यक्तिगत मूल्यों की प्रकृति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों पर विद्यालय के प्रकार के प्रभाव का अध्ययन
3. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करना।

## शोध प्रश्न

1. माध्यमिक विद्यालय के विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के छात्रों के बीच व्यक्तिगत मूल्यों की प्रकृति क्या है?

## परिकल्पना

1. मिशनरी और गैर–मिशनरी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के औसत व्यक्तिगत मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

## क्रियाविधि

वर्तमान अध्ययन कार्योत्तर अध्ययन है जिसमें सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। नमूने के तौर पर 10 स्कूलों (5 मिशनरी और 5 गैर–मिशनरी) को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। इन स्कूलों से नौवीं कक्षा में पढ़ने वाले 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 150 लड़के और 150 लड़कियां थीं। डेटा एकत्र करने के लिए अन्वेषक ने व्यक्तिगत रूप से सभी स्कूलों का दौरा किया और छात्रों से डेटा एकत्र किया। डेटा एकत्र करने के लिए कमला वशिष्ठ और अंजू जयदीप द्वारा विकसित व्यक्तिगत मूल्य पैमाने का उपयोग किया गया। शैक्षणिक उपलब्धि के स्तर के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए, अंतिम परीक्षा में छात्र द्वारा प्राप्त अंकों को परिणाम घोषित करने के बाद स्कूल से अन्वेषक द्वारा एकत्र किया गया।

## विश्लेषण तथा व्याख्या

### मिशनरी और गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना

तालिका 1 में मिशनरी और गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

**तालिका 1: स्कूल के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना**

| विद्यालय के प्रकार | N | Means | S.D. | df | t - value | Sig. / Not Sig. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थी | 150 | 224.33 | 25.108 | 298 | 3.678 | 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण है |
| गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थी | 150 | 221.48 | 24.017 | | | |

**स्रोतः** प्राथमिक डेटा से परिकलित

जैसा कि तालिका 1 में दिखाया गया है, मिशनरी स्कूल में 150 एवं गैर–मिशनरी स्कूल में भी 150 विद्यार्थियों का सर्वेक्षण किया गया था। मिशनरी स्कूल के विद्यार्थियों का औसत स्कोर 224.33 था, साथ ही मानक विचलन 25.108 था। जबकि गैर–मिशनरी स्कूल के विद्यार्थियों का औसत स्कोर 221.48 था, साथ ही मानक विचलन 24.017 था। 298 डीएफ के साथ 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण मानक टी–मान 3.678 है। परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाता है कि माध्यमिक विद्यालयों में मिशनरी और गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थियों के मूल्यों में महत्वपूर्ण अंतर है। नतीजतन, शून्य परिकल्पना को महत्व के 0.05 स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है और यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि मिशनरी और गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थियों के मूल्यों में महत्वपूर्ण अंतर है।

तालिका 2 में लिंग के आधार पर मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों में विद्यार्थियों के लिंग और मूल्यों की तुलना की गई है।

**तालिका 2: लिंग के आधार पर मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों में विद्यार्थियों के लिंग और मूल्य स्कोरों की तुलना**

| विद्यालय के प्रकार | लिंग | N | Mean | S.D. | df | t-value | Sig. / Not Sig. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थी | लड़के | 75 | 66.78 | 24.689 | 148 | 0.301 | 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है |
| | लड़कियाँ | 75 | 67.84 | 24.421 | | | |
| गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थी | लड़के | 75 | 65.11 | 23.110 | 148 | 0.423 | 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है |
| | लड़कियाँ | 75 | 65.78 | 23.986 | | | |

**स्रोतः** प्राथमिक डेटा से परिकलित

जैसा कि तालिका 2 में दिखाया गया है, मिशनरी स्कूल में 150 विद्यार्थियों में से 75 लड़कों और 75 लड़कियों का सर्वेक्षण किया गया था। लड़कों ने 66.78 औसत स्कोर दिया और मानक विचलन 24.689 था, जबकि लड़कियों ने 67.84 औसत स्कोर दिया और मानक विचलन 24.421 था। 257 डीएफ के साथ 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से परिकलित टी–मान 0.801 है। वहीं गैर–मिशनरी में भी 150 विद्यार्थियों में से 75 लड़कों और 75 लड़कियों का सर्वेक्षण किया गया था। लड़कों का औसत स्कोर 65.11 था, जबकि मानक विचलन 23.110 था, जबकि लड़कियों का औसत स्कोर 65.78 था, जबकि मानक विचलन 23.986 था। 148 डीएफ के साथ 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से परिकलित टी–मान 0.423 है। परिणामों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों में लड़कों और लड़कियों के मूल्यों में महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। नतीजतन, शून्य परिकल्पना को महत्व के 0.05 स्तर पर स्वीकार किया जाता है और लड़कों और लड़कियों में मूल्यों के आधार पर कोई अंतर नहीं है।

**मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और मूल्यों की तुलना**

तालिका 3 में मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों में विद्यार्थियों के मूल्यों और शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर प्राप्तांकों की तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

**तालिका 3: मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों में विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के आधार पर प्राप्तांकों की तुलना**

| विद्यालय के प्रकार | भिन्नता के स्त्रोत | डीएफ | वर्गों का योग | माध्य वर्ग | F-मान | महत्वपूर्ण है/नहीं है |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थी | नमूनों के बीच भिन्नता | 2 | 2802.43 | 1411.18 | 0.359 | 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है |
| | नमूनों के भीतर भिन्नता | 147 | 474251.27 | 597.43 | | |
| | कुल | 149 | | | | |
| गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थी | नमूनों के बीच भिन्नता | 2 | 298.44 | 149.23 | 0.271 | 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है |
| | नमूनों के भीतर भिन्नता | 147 | 439841.01 | 543.48 | | |
| | कुल | 149 | | | | |

**स्रोतः** प्राथमिक डेटा से परिकलित

कुल नमूने को मूल्यों पर शैक्षणिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए तीन समूहों में वर्गीकृत किया गयाः निम्न, मध्यम और उच्च उपलब्धि वाले। मिशनरी स्कूलों के प्राप्तकर्ताओं की कम, मध्यम और उच्च संख्या क्रमशः 8, 75 और 67 थी; माध्य स्कोर क्रमशः 225.32, 221.26 और 219.48 थी, और मानक विचलन क्रमशः 26.84, 24.16 और 25. 97 थी। जबकि गैर–मिशनरी स्कूलों के प्राप्तकर्ताओं की न्यूनतम, मध्यम और उच्च संख्या क्रमशः 10, 100 और 40 थी; मध्यम स्कोर 215.87, 214.21 और 213.67 थे, जबकि मानक विचलन क्रमशः 21.89, 21.68 और 22.23 था। विचरण विश्लेषण का उद्देश्य इन अंकों में मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थियों के मूल्यों में अंतर का आकलन करना था। तालिका 4.6 में समूहों के बीच, समूहों के भीतर और औसत वर्गों की गणना की गई है। मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों का महत्व के 0.05 स्तर पर F मान क्रमशः 2.821 एवं 2.742 का परिकलित मान क्रमशः 0.359 एवं 0.271 है। परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाता है कि मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थियों के मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। नतीजतन, शून्य परिकल्पना को स्वीकार करके यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**चर्चा और व्याख्या**

मिशनरी और गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में बहुत अंतर है. ये मूल्यों में कड़ी मेहनत, महत्वाकांक्षा, दूरदर्शिता, सावधानी, प्रस्तुति, स्वच्छता और स्वच्छता, शारीरिक फिटनेस और शारीरिक व्यायाम, बड़ों पर भरोसा करना, समझ, टीम–वर्क, मैत्री, कर्तव्यनिष्ठा, स्वतंत्रता, पर्यावरण, सहानुभूति, आत्म–अनुशासन यद्यपि, विद्यार्थियों का नैतिक और आध्यात्मिक विकास शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, जो पाठ्यक्रम के एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। पाठ्यक्रम के हर हिस्से में सभी स्कूलों, शिक्षकों और माता–पिता की बड़ी जिम्मेदारी है कि वे अपने विद्यार्थियों में व्यक्तिगत

मूल्यों को विकसित करें। क्योंकि लड़के और लड़कियां दोनों समान रूप से अपने स्कूलों, शिक्षकों और माता–पिता के घर से मूल्यों में प्रभावित होते हैं, जो पाठ्यक्रम के हर हिस्से में उनके मूल्यों को विकसित करने में बड़ी जिम्मेदारी निभाते हैं। स्कूल व्यक्तिगत मूल्यों को प्रोत्साहित करते हैं जो अधिकांश लोगों द्वारा साझा किए जाते हैं। साथ ही, पारिवारिक मूल्यों और माता–पिता की जिम्मेदारियों को नैतिकता और व्यक्तिगत मूल्यों के क्षेत्र में अधिक महत्व देना चाहिए। परिणामों से पता चलता है कि मिशनरी स्कूल गैर–मिशनरी स्कूलों से बहुत अलग हैं और चर्चों के अलग–अलग संप्रदायों के तहत व्यक्तिगत मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं। वर्तमान शोध परिणाम विलेज और फ्रांसिस (2016) के अध्ययन से मिलता–जुलता है, जिसमें पाया गया कि धार्मिक आधारहीन स्कूलों में विद्यार्थियों के मूल्यों और कैथोलिक स्कूलों में विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई स्पष्ट अंतर नहीं था। इसके विपरीत, ज़मेन (1997) और स्वाट्र्ज (2012) ने अध्ययन में पाया गया कि लड़कों और लड़कियों में मूल्यों के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर था। नमूना आकार, स्कूल का प्रकार, छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि इस परिणाम को जन्म दे सकते हैं। मिशनरी और गैर–मिशनरी स्कूलों में माध्यमिक विद्यार्थियों की तुलना ने व्यक्तिगत मूल्यों में बड़ा अंतर दिखाया। मिशनरी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में गैर–मिशनरी स्कूलों के छात्रों में व्यक्तिगत मूल्यों के प्रति अधिक प्रतिबद्धता होती है। यही कारण है कि माता–पिता जो अपने बच्चों को मिशनरी स्कूलों में भेजते हैं, वे उम्मीद कर सकते हैं कि उनके बच्चे मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध समुदाय में शामिल होंगे। विलेज और फ्रांसिस (2016) ने एक अध्ययन में पाया गया कि धार्मिक आधार के बिना कैथोलिक स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से कैथोलिक स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में काफी अंतर था, वर्तमान खोज से मेल खाता है। धार्मिक नींव वाले स्कूलों में गैर–धार्मिक विद्यार्थियों का अधिक असंतोष, धार्मिक नींव वाले स्कूलों में अपने समकक्षों की तुलना में अधिक था। इसके अलावा, घोषाल (2014) ने शहरी और ग्रामीण स्कूलों में विद्यार्थियों की मूल्यों की जागरूकता में काफी अंतर पाया। परिणाम यह भी स्पष्ट रूप से दिखाता है कि मिशनरी एवं गैर–मिशनरी स्कूलों के विद्यार्थियों के मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अर्थात् मिशनरी या गैर–मिशनरी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि से मूल्यों का कोई असर नहीं है। मिशनरी एवं गैर–मिशनरी विद्यालयों में शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर निम्न, मध्यम और उच्च समूहों के विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसके कारण मिशनरी स्कूलों में छात्रों में मूल्यों के प्रति अत्यधिक प्रतिबद्धता और शिक्षकों के प्रति अत्यधिक आत्म–प्रेरणा होती है। इसी से मिलता जुलता अध्ययन चेतना शर्मा (2014) का भी था जिसने सरकारी और निजी स्कूलों के शैक्षणिक लक्ष्यों और मूल्यों में लड़कों और लड़कियों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं पाया। इसके विपरीत, निधि और ज्योति (2011) ने पाया कि विद्यार्थियों में आर्थिक, पारिवारिक, धार्मिक, ज्ञान, स्वास्थ्य और लोकतांत्रिक मूल्यों के बीच स्पष्ट अंतर था। इस परिणाम को पाने के पीछे कई कारण हो सकते हैं, जिनमें प्रतिदर्श का परिसीमन, स्कूल का प्रकार और पारिवारिक वातावरण शामिल हैं।

## निष्कर्ष

मिशनरी और गैर–मिशनरी विद्यालयों के बीच के शिक्षा प्रणालियों का मनोवैज्ञानिक विकास पर प्रभाव तुलनात्मक अध्ययन से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि विभिन्न शैली की शिक्षा कैसे बच्चों के मानविक और मानसिक विकास पर प्रभाव डालती है। इससे हम शिक्षा प्रणालियों को सुधारने और छात्रों के मनोवैज्ञानिक विकास को बेहतर समझ सकते हैं। इससे हम शिक्षा प्रणालियों को सुधारने और छात्रों के मानसिक विकास को बेहतर बनाने के लिए नई शिक्षा नीतियों और प्रथाओं का विकास कर सकते हैं। उपरोक्त अध्ययन से यह पता चलता है कि –

1. मिशनरी स्कूलों के छात्रों में व्यक्तिगत मूल्य गैर–मिशनरी स्कूलों के छात्रों की तुलना में अधिक विकसित और उच्च स्तर वाले होते हैं।
2. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों के अंक जितने अधिक होंगे, माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के अंक उतने ही अधिक होंगे।

## शैक्षिक निहितार्थ

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच व्यक्तिगत मूल्यों के विकास की ओर ले जाने वाली गतिविधियों को प्रदान करने का प्रयास किया जाना चाहिए क्योंकि इससे छात्रों की उपलब्धि में वृद्धि होती है। मिशनरी स्कूल अपनी पाठ्यचर्या और सह–पाठयक्रम गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के बीच व्यक्तिगत मूल्य प्रदान कर रहे हैं, इसे गैर–मिशनरी माध्यमिक विद्यालयों द्वारा अपनाया जा सकता है।

## संदर्भ

घोषाल, तापस (2014). सांस्कृतिक गतिविधियों और मूल्य जागरूकता के बीच संबंध पर एक अध्ययन, अप्रकाशित थीसिस, बर्दवान विश्वविद्यालय। http://hdl.handle.net/10603/201952.

शर्मा, चेतना (2014). नैतिक मूल्यों के प्रति माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के दृष्टिकोण पर एक अध्ययन, अप्रकाशित डॉक्टरेट थीसिस, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबेरेवाला विश्वविद्यालय, http://hdl.handle.net/10603/38868

ज़मेन, जी.एस. (1997). ए स्टडी ऑफ सोशल, मोरल एंड रिलीजियस वेल्यू ऑफ स्टूडेन्ट्स ऑफ क्लास IX एंड देयर रिलेशनशिप विद मोरल, कैरेक्टर ट्रैट्स एंड पर्सनालिटी एडजेस्टमेंट, पी–एच.डी. एजुकेशन, अवध यूनिवरसिटी।

निधि, वी. और ज्योति, बी. (2011). भारतीय स्नातक छात्रों में उभर रहे व्यक्तिगत मूल्यः महाराष्ट्र के एक चयनित शहर में आयोजित अध्ययन, इंटरनेशनल जे. एडु. सोशल डेवलपमेंट, 2 (3), 363–374.

मलिक, आर (2015). कामकाजी और गैर कामकाजी माताओं की 10वीं कक्षा की छात्राओं की आत्म–अवधारणा का अध्ययन, प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान में उन्नत अनुसंधान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 4(11), 91–97।

विलेज, ए. और फ्रांसिस, एल.जे. (2016). मेजरिंग द कन्ट्रीब्यूशन ऑफ रोमन कैथोलिक सेकेण्ड्री स्कूल्स टू स्टूडेन्ट्स रिलीजियस, पर्सनल एंड सोशल वेल्यू, जर्नल ऑफ कैथोलिक एडुकेशन, 19(3), 86–115.

सिन्हा, एन.के., शर्मा, पी.के., और गुप्ता, पी. (2007). किशोरों में नैतिक मूल्य का अध्ययन, एशियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड एजुकेशन, 40, 7–8।

स्वाट्र्ज, एस.एच. (2012). यूनिवर्सल इन द कॉन्टेन्ट एंड स्ट्रक्चर ऑफ वेल्यूः थ्योरी एंड इंपीरिकल एंड टेस्ट्स इन 20 कंट्रीज, एडवांस इन एक्सपेरिमेंटल सोशल साईकोलॉजी, 25, 1–65.

स्टीवेंसन, एच., और न्यूमैन, आर. (1986). गणित और पढ़ने में उपलब्धि और दृष्टिकोण की दीर्घकालिक भविष्यवाणी। बाल विकास, 57, 646–659।